(ब) गद्यांशों की विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

11. भक्तिन

— महादेवी वर्मा

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ के साथ

प्रश्न 1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ?

उत्तर—भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था। लक्ष्मी अर्थात् धन की देवी किंतु ऐश्वर्य और समृद्धि सूचक नाम के अनुरूप उनका जीवन नहीं था।

अर्थात् वह बेहद गरीब थी। इसलिए वह लोगों के 'नाम बड़े दर्शन छोटे' जैसी कहावतों के उपहास से बचने के लिए अपना नाम छुपाती थी। लक्ष्मी नाम उसे उसके माता-पिता द्वारा दिया गया था।

भक्तिन को भक्तिन नाम महादेवी वर्मा ने दिया क्योंकि भक्तिन ने गले में कंठी की माला पहन रखी थी अत: लेखिका ने उसे लक्ष्मी के बदले भक्तिन कहना उचित समझा।

प्रश्न 2. दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं ?

उत्तर—जी, हाँ हम इससे पूर्णत: सहमत हैं क्योंकि पाठ में भक्तिन ही एक ऐसी पात्र है जो तीन बेटियों को जन्म देती है जबकि उसकी जिठानियाँ और सास सभी ने पुत्रों को जन्म दिया था। घर के काम-काज हो या खान-पान या फिर आराम, मान, सम्मान सभी क्षेत्र में भक्तिन और उसकी पुत्रियों को ही अभाव, तिरस्कार व उपेक्षा का सामना करना पड़ा जो उसकी सास और जिठानियों द्वारा दिया गया था, न कि उसके पति द्वारा। वह पति की प्यारी थी ऐसी उपेक्षा का कारण भारतीय समाज की स्त्रियों की दकियानूसी सोच है। ऐसी घटनाएँ ही प्रमाणित करती हैं कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है।

प्रश्न 3. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे ?

उत्तर—भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति थोपा जाना निश्चित रूप से विवाह के संदर्भ में स्त्री मानवाधिकार की स्वतंत्रता को कुचलने का ही दुष्परिणाम है। पुरुष प्रधान भारतीय समाज में हर तरह के फैसला करने व निर्णय लेने का अधिकार केवल पुरुष को ही मिलता आ रहा है। एक ओर जहाँ भक्तिन की विधवा बेटी की इच्छा के विरुद्ध के तीतरबाज़ युवक द्वारा की जाने वाली जबरदस्ती और अभद्रता वहीं दूसरी ओर अपने बचाव में भक्तिन की बेटी द्वारा उसे पीटने का प्रमाण मिलने के बाद भी पंचों ने फैसला अपनी इच्छा के अनुरूप देते हुए तीतरबाज़ को उसके पति के रूप में थोपा। यह स्त्री मानवाधिकार का हनन था। यह महाभारत काल से चली आ रही परंपरा है जहाँ द्रौपदी को उसकी इच्छा जाने बिना ही पाँच पतियों की पत्नी बनने का आदेश दिया गया। मीरा की शादी बचपन में कर दी गई। बाल विवाह प्राचीन परंपरा रही है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ स्त्रियों की इच्छा को जाने बिना ही उन्हे युद्ध की जीत के साथ ही जबरदस्ती रानी या पटरानी बना लिया जाता था। जैसे महाभारत में अम्बा, अम्बे, अम्बालिका।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. ''भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं'' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

उत्तर— ''भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं'' ऐसा लेखिका ने इसलिए कहा क्योंकि लेखिका ने स्वयं अनुभव किया कि अनेक अच्छाइयों, समर्पित सेवाभाव, सादगी और सरलता के बावजूद वह कई मामलों में चतुराई और वाकचातुर्य का परिचय देती थी वह लेखिका को नैतिकता के विरुद्ध लगता था।

प्रश्न 5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है ?

उत्तर—भक्तिन शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने में माहिर (निपुण/दक्ष) थी। वह प्रत्येक बृहस्पतिवार को अपना सिर मुँडवाती थी जो लेखिका को पसंद नहीं था। लेखिका स्त्रियों द्वारा सिर मुँडाये जाने को अच्छा नहीं मानती थी अत: वह भक्तिन को ऐसा करने से मना करती तो भक्तिन तुरंत शास्त्र का प्रमाण दे देती। 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध' यह उक्ति उसकी स्वयं की रचना थी। ऐसे शास्त्र के बारे में लेखिका भी अनभिज्ञ थी।

प्रश्न 6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई ?

उत्तर—भक्तिन के आ जाने से लेखिका अधिक देहाती हो गई क्योंकि भक्तिन ने लेखिका को सीमित साधनों में जीवन को सरलता से जीने के लिए जाग्रत कर दिया जिसके तहत लेखिका को रात में मकई का दलिया, सवेरे मट्ठे से सोंधा लगने लगा। बाजरे के तिल लगे पुए, ज्वार के भुट्टे के हरे दानों की स्वादिष्ट खिचड़ी, सफेद महुए की लपसी का आनंद लेने लगी।

पाठ के आस-पास

प्रश्न 1. आलो आँधारि की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में आप क्या समानता देखते हैं ?

उत्तर— आलो आँधारि की नायिका एक घरेलू नौकरानी है। भक्तिन भी लेखिका के घर में नौकरी करती है। दोनों में यही समानता है। दूसरे, दोनों ही घर में पीड़ित हैं। परिवार वालों ने उन्हें पूर्णत: उपेक्षित कर दिया था। दोनों ने आत्मसम्मान को बचाते हुए जीवन-निर्वाह किया।

प्रश्न 2. भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह का फैसला पंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरतअंगेज बात नहीं है। अखबारों या टी.वी. समाचारों में आनेवाली किसी ऐसी ही घटना को भक्तिन के उस प्रसंग के साथ रखकर उस पर चर्चा करें।

उत्तर—भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह का फैसला पंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरत-अंगेज बात नहीं है। अब भी पंचायतों का तानाशाही रवैया बरकरार है। अखबारों या टी.वी. पर अक्सर समाचार सुनने को मिलते हैं कि प्रेम विवाह को पंचायतें अवैध करार देती हैं तथा पति-पत्नी को भाई-बहन की तरह रहने के लिए विवश करती हैं। वे उन्हें सजा भी देती हैं। कई बार तो उनकी हत्या भी कर दी जाती है। यह मध्ययुगीन बर्बरता आज भी विद्यमान है।

प्रश्न 3. पाँच वर्ष की वय में ब्याही जानेवाली लड़कियों में सिर्फ भक्तिन नहीं है, बल्कि आज भी हजारों अभागिनियाँ हैं। बाल-विवाह और उम्र के अनमेलपन वाले विवाह की अपने आस-पास हो रही घटनाओं पर दोस्तों के साथ परिचर्चा करें।

उत्तर—विद्यार्थी आपस में परिचर्चा करें।

प्रश्न 4. महादेवी जी इस पाठ में हिरनी सोना, कुत्ता बसंत, बिल्ली गोधूलि आदि के माध्यम से पशु-पक्षी को मानवीय संवेदना से उकेरने वाली लेखिका के रूप में उभरती हैं। उन्होंने अपने घर में और भी कई पशु-पक्षी पाल रखे थे तथा उन पर रेखाचित्र भी लिखे हैं। शिक्षक की सहायता से उन्हें ढूँढ़कर पढ़ें। जो 'मेरा परिवार' नाम से प्रकाशित है।

उत्तर—विद्यार्थी स्वयं पढ़े।

Scanned with CamScanner

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'भक्तिन' पाठ के आधार पर भक्तिन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'भक्तिन' के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

पाठ के आधार पर भक्तिन की तीन विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—'भक्तिन' लेखिका की सेविका है। लेखिका ने उसके जीवन-संघर्ष का वर्णन किया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. साधारण व्यक्तित्व—भक्तिन, अधेड़ उम्र की महिला है। उसका कद छोटा व शरीर दुबला-पतला है। उसके होंठ पतले हैं तथा आँखें छोटी हैं।

2. कर्मठ—भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं आदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

3. संघर्षशील महिला—भक्तिन बेहद स्वाभिमानी है। पिता की मृत्यु के बाद विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वारा अपमानित किए जाने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

4. सच्ची सेविका—भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण हैं। लेखिका ने उसे हनुमानजी की स्पर्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

5. धार्मिक प्रवृत्ति—भक्तिन धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। उसे शास्त्र का ज्ञान था अत: वो अपनी बातों का प्रमाण शास्त्र की घटनाओं से देती थी। वह धार्मिक नियमों का पालन करती थी। यही कारण था कि वह बृहस्पतिवार को अपना सिर मुँडवा लेती थी।

प्रश्न 2. भक्तिन व लेखिका के बीच कैसा संबंध था ?

उत्तर—लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक-स्वामी का संबंध था। परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था। महादेवी उसकी कुछ आदतों से परेशानी थी, जिसकी वजह से यदा-कदा उसे घर चले जाने को कह देती थी। इस आदेश को वह हँसकर टाल देती थी। दूसरे, वह नौकरानी कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी। वह लेखिका की छाया बनकर घूमती थी। वह आने-जाने वाले, अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब व आम की तरह पृथक् अस्तित्व रखती थी हर सुख-दुख में लेखिका के साथ रहती थी।

प्रश्न 3. महादेवी ने भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में बाँटा ?

उत्तर—महादेवी ने भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों में बाँटा जो निम्नलिखित हैं—

प्रथम—विवाह से पूर्व।

द्वितीय—ससुराल में सधवा के रूप में।

तृतीय—विधवा के रूप में।

चतुर्थ—महादेवी की सेवा में।

प्रश्न 4. भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किए जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता रहा है। लड़के को सोने का सिक्का माना जाता रहा है तथा लड़की को खोटा सिक्का। यही कारण है कि भक्तिन के साथ ससुराल में बहुत बुरा व्यवहार किया गया। उससे घर-भर के कठिन काम करवाए गए। उसकी लड़कियाँ भी गोबर थापती नजर आती थीं। जबकि लड़कों को जन्म देने वाली उसकी सास तथा जेठानियाँ आराम से बैठकर बातें फोड़ती थीं। उनके काले-कलूटे बच्चे राब और मलाई खाते थे। भक्तिन और उसकी लड़कियों को काले गुड़ की डली के साथ चना-बाजरा चबाने को मिलता था।

Scanned with CamScanner

12. बाजार दर्शन

—जैनेन्द्र कुमार

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ के साथ

प्रश्न 1. बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है ?
(CBSE 2009; AI CBSE 10)

अथवा

बाज़ार का जादू क्या है ? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
(CBSE 2009, 11; AI CBSE 12)

उत्तर—बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर निम्न असर पड़ता है—

1. बाज़ार का जादू चढ़ने पर—जब बाज़ार का जादू चढ़ता है, व्यक्ति को बाज़ार की हर वस्तु काम की जरूरत की लगने लगती है और वह उसके आकर्षण में फँसकर बहुत से सामान खरीद लेता है। पर्चेजिंग पावर को दिखाने और अहं की संतुष्टि के लिए इतना सामान खरीद लेता है कि उसका मनीबैग खाली हो जाता है। बजट फेल हो जाता है।

2. बाज़ार का जादू उतरने पर—बाज़ार का जादू उतरने पर उसे अहसास होने लगता है कि वह ऐसी चीजों को खरीद लाया जो उसको आराम देने की बजाए खलल पैदा कर रही है। और मनीबैग खाली हो जाने का अफसोस होता है।

प्रश्न 2. बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता है ? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति-स्थापित करने में मददगार हो सकता है ?
(AI CBSE 2008)

उत्तर—बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का आत्मसंतुष्टि और आत्मनियंत्रण सशक्त पहलू है जो उन्हें बाज़ार के आकर्षण और जादू से बाँध नहीं पाता है। वे तरह-तरह के सामानों से भरे दुकानों के बीच से गुजरते हैं। खुली आँखें, तुष्ट मग्न होकर चलते जाते हैं किंतु उन पर बाज़ार की चकाचौंध का तनिक भी असर नहीं पड़ता है। वे अपने काम की वस्तु काला नमक और जीरा लेकर वापस आ जाते हैं। साथ-ही चूरन बेचने के वक्त भी वे छः आने से ज्यादा की कमाई नहीं करते हैं। बची हुई चूरन बच्चों में मुफ्त बाँट देते हैं, इस कार्य से यह प्रमाणित होता है कि उनमें धन कमाने की स्पृहा (चाहत) भी नहीं है। उनका यह स्पिरचुअल बल ही समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है।

प्रश्न 3. 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है ? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं ? अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें हैं ?
(AI CBSE 2017)

उत्तर— **'बाजारूपन' से तात्पर्य**— खालीमन और भरी जेब से बाज़ार जाने वाले वे लोग जिन्हें यही नहीं मालूम होता है कि उनकी जरूरत क्या है ? उन्हें क्या खरीदना है ? ऐसे लोग अपनी पर्चेजिंग पावर के गर्व में गैर जरूरी वस्तुओं को खरीदकर बाज़ार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। इससे बाज़ार में कपट बढ़ती है। एक की हानि दूसरे का लाभ होता है। निष्कपट शिकार हो जाता है। सद्भाव की भावना खत्म हो जाती है। भाई-भाई और पड़ोसी के बीच ग्राहक और बेचक का संबंध हो जाता है यही बाजारूपन है।

बाज़ार की सार्थकता— बाज़ार की सार्थकता हमारी जरूरत की वस्तुओं को खरीदने में हैं। इससे बाज़ार को लाभ होता है और उसका उद्देश्य पूरा होता है। खरीददार को भी लाभ होता है। अपनी जरूरत पूरा करके इस प्रकार जरूरत की वस्तुओं के आदान-प्रदान द्वारा ग्राहक और बेचक दोनों को सच्चा लाभ प्राप्त होता है। जरूरतमंद लोग जिन्हें यह मालूम होता है कि बाज़ार में क्या खरीदना है वही लोग बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं।

Scanned with CamScanner

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बाज़ार का जादू क्या है ? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ? बाज़ार दर्शन पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। **[CBSE (foreign) 2009]**

उत्तर—बाज़ार की तड़क-भड़क और वस्तुओं के रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मजबूर हो जाता है तो उसे बाज़ार का जादू कहते हैं। बाज़ार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव न होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर-जरूरी चीजें खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीजें आराम में मदद नहीं करतीं बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं। इससे वह झुंझलाता है, परंतु उसके स्वाभिमान को सेंक मिल जाती है।

प्रश्न 2. 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर पैसे की व्यंग्य शक्ति कथन को स्पष्ट कीजिए।

[CBSE (Delhi) 2015, Set II]

उत्तर—पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है। परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

प्रश्न 3. 'कैपिटलिस्टिक' अर्थशास्त्र को लेखक ने किन आधारों पर मायावी एवं अनीतिपूर्ण कहा है ?

अथवा

लेखक ने अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र क्यों कहा है ? उदाहरण देकर समझाइए।

(AI CBSE 2016)

उत्तर—लेखक के अनुसार—कैपिटलिस्टिक अर्थशास्त्र अर्थात् पूँजीवादी अर्थशास्त्र, जो धन को अधिक से अधिक बढ़ाने पर बल देता है, मायावी है, छली है और अनीतिपूर्ण है। उसके निम्नलिखित कारण हैं—

1. बाज़ार का मूल दर्शन है— आवश्यकताओं की पूर्ति करना। यदि इस लक्ष्य को छोड़कर व्यापारी धन कमाने की होड़ में लग जाए तो बाज़ार का असली लक्ष्य ही नष्ट हो जाता है। यह बाज़ार के नाम पर भटकाव है। ग्राहक को आवश्यकता की वस्तु उचित दाम पर देने की बजाय अगर पैसा कमाना लक्ष्य रख लिया जाय तो बाज़ार का असली लक्ष्य पूरा ही नहीं हो पाता।

2. पैसा कमाने का लक्ष्य साधने से व्यापार में कपट बढ़ता है। व्यापारी ग्राहक की हानि करके भी अपना लाभ कमाना चाहते हैं। इससे शोषण की शुरुआत हो जाती है। अतः यह अनीतिपूर्ण है।

3. ऐसे पूँजीवादी बाज़ार से मानवीय प्रेम, भाईचारा तथा सौहार्द्र समाप्त होता है। सभी लोग ग्राहक और विक्रेता बनकर रह जाते हैं।

4. पूँजीवादी अर्थशास्त्र के कारण ही बाज़ार में फैंसी चीजों का प्रचलन बढ़ता है। लोग बिना आवश्यकता के ही उसके रूप जाल में फँसने लगते हैं। इसलिए लेखक ने उसे मायावी कह दिया है।

प्रश्न 4. 'खाली मन तथा भरी जेब' से लेखक का क्या आशय है? ये बातें बाज़ार को कैसे प्रभावित करती हैं ? **[CBSE (Foreign) 2014]**

उत्तर—'खाली मन तथा भरी जेब' से लेखक का आशय है—"मन में किसी निश्चित वस्तु को खरीदने की इच्छा न होना या वस्तु की आवश्यकता न होना"। परंतु जब जेबें भरी हो तो व्यक्ति आकर्षण के वशीभूत होकर वस्तुएँ खरीदता है। इससे बाजारवाद को बढ़ावा मिलता है।

th CamScanner

प्रश्न 5. 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर पैसे की व्यंग्य-शक्ति को सोदाहरण समझाइए।

(AI CBSE 2016)

उत्तर—पैसे की व्यंग्य शक्ति से तात्पर्य है—"पैसे के आधार पर स्वयं को हीन या श्रेष्ठ समझना"। पैसा ही हीनता या श्रेष्ठता का अहसास कराता है। यही पैसे की व्यंग्य-शक्ति है।

अपनी क्रय-शक्ति को दिखाकर खरीददार स्वयं को ऊँचा सिद्ध करता है। इसलिए वह बाज़ार से बिना जरूरत के ढेर सारा सामान खरीद लाता है।

प्रश्न 6. बाज़ार जाते समय आपको किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? 'बाजार-शक्ति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर—बाज़ार जाते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम बिना किसी जरूरत के वहाँ न जाएँ और उनकी ओर ललचाई निगाहों से न देखें। लेखक के शब्दों में वहाँ 'खाली मन न जाएँ'।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. उचित शब्दों के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. जैनेन्द्र कुमार ..... है। (कवि / एक मनोवैज्ञानिक कथाकार)
2. परख, सुनीता, त्यागपत्र एवं कल्याणी ..... गद्य की विधा के अन्तर्गत आते हैं। (उपन्यास / कहानी)
3. जैनेन्द्र की भाषा ..... रूप में दिखाई देती है। (एक / दो)
4. बाजार दर्शन जैनेन्द्र का एक महत्वपूर्ण ..... है। (संस्मरण / निबंध)
5. कथाकार होने के साथ-साथ जैनेन्द्र की पहचान अत्यन्त ..... के रूप में रही। (गंभीर चिंतक / एक संत)

उत्तर— 1. एक मनोवैज्ञानिक कथाकार, 2. उपन्यास, 3. दो, 4. निबंध, 5. गंभीर चिंतक।

प्रश्न 2. सत्य / असत्य कथन छाँटकर लिखिए—

1. लोक संयमी भी होते हैं— यह वाक्य औपचारिक वाक्य है।
2. बाजार में एक जादू है। यह वाक्य अनौपचारिक वाक्य है।
3. महिमा का मैं कायल हूँ। यह वाक्य अनौपचारिक वाक्य है।
4. बाजार है कि शैतान का जाल है। यह वाक्य अनौपचारिक वाक्य है।
5. बाजार दर्शन में व्याख्यात्मक एवं विचारात्मक शैली का प्रयोग हुआ।

उत्तर— 1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. सत्य, 5. सत्य।

14. पहलवान की ढोलक

— फणीश्वर नाथ रेणु

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ के साथ

प्रश्न 1. कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था ? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते है; उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर—कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में गजब का तालमेल था। ढोलक की आवाज मानो पहलवान का मार्गदर्शन कर रही हो, अतः उसकी आवाज के अनुरूप वह कुश्ती के दाँव-पेंच में परिवर्तन करते हुए लड़ता था।

Scanned with CamScanner

निम्नलिखित ध्वन्यात्मक शब्द पहलवान में जोश और उत्साह का संचार करते थे—

1. चट्-धा गिड़-धा — आजा भिड़ जा
2. चट्टाक चट्धा — उठाकर पटक दे
3. ढाक-ढिना — वाह पट्टे
4. चट गिड़-धा — मत डरना
5. धाक-धिना, तिरकट-तिना — दाँव काटो बाहर हो जा
6. धिना-धिना, धिक धिना — चित करो।

प्रश्न 2. कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए ?

उत्तर—कहानी के निम्न मोड़ों पर लुट्टन के जीवन के निम्न परिवर्तन आते हैं—

1. बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु के पश्चात्, बाल विवाह हो जाने के कारण उनका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया।
2. सास के अपमानों का बदला गाँव वालों से लेने के लिए पहलवान बना।
3. श्याम नगर दंगल में चाँद सिंह नामक पहलवान को हराकर राज दरबार का पहलवान बना।
4. 15 वर्षों तक राज पहलवान लुट्टन सिंह रहने के बाद राजा की मृत्यु पश्चात् उसके पुत्र द्वारा राज दरबार से निकाल दिया गया।
5. पत्नी की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी। अत: अपने दोनों पुत्रों के साथ वापस गाँव आकर रहने लगा।
6. गाँव में कुश्ती का स्कूल चलाया।
7. महामारी की चपेट में अपने दोनों पुत्रों को खो दिया।
8. अंतत: स्वयं महामारी की चपेट में आ गया।

प्रश्न 3. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है ?

उत्तर—लुट्टन पहलवान ने किसी गुरु से कुश्ती की परंपरागत शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। वह बचपन में गाय का दूध पीकर कसरत करता था। इससे उसकी भुजाएँ माँसल और सुडौल हो गईं, शरीर पहलवानों की भाँति दिखने लगा। लोग उससे डरने लगे अत: वह स्वयं को पहलवान समझने लगा किंतु ढोल की आवाज उसकी थाप लुट्टन के अंदर शक्ति का संचार करते थे। अत: वह स्वयं ढोलक की ध्वनियों के आधार पर अपनी कुश्ती के दाँव-पेंच को निर्धारित कर पहलवानी करता था। ढोलक की प्रेरक शक्ति और उसके थाप के निर्देशनों का पालन करने के कारण वह ढोलक को ही गुरु मानता और पहलवानी से पूर्व व पश्चात् उसे प्रणाम करता इसलिए उसने कहा कि मेरा कोई गुरु पहलवान नहीं यही ढोल है।

प्रश्न 4. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा ?

उत्तर—गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन ढोल बजाता रहा क्योंकि उसे मालूम था कि दर्द से कराहते लोगों की निराशा में आशा का और शक्ति का संचार ढोल की आवाज से ही होता है। लोगों को अपने प्राण छोड़ने में तकलीफ कम होती है। रात्रि की विभीषिका को चुनौती देते हुए वह ढोलक बजाता था। पीड़ित लोगों के अंदर संजीवनी शक्ति भरने के कारण और परोपकार की भावना से वह अपने बेटों की मृत्यु के बाद भी ढोल बजाता रहा।

प्रश्न 5. ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था ? **(CBSE 2008)**

उत्तर—ढोलक की आवाज़ रात के सन्नाटे को कम करती थी। मलेरिया और हैजे से अर्द्धमृत, औषधि उपचार पथ्य विहीन प्राणियों में संजीवनी शक्ति भरती थी। बच्चे-बूढ़े और जवानों की आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन शक्ति शून्य स्नायुओं में बिजली-सी दौड़ जाती थी। जो महामारी के प्रकोप से बच नहीं पाते उन लोगों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी। वे मृत्यु से नहीं डरते थे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 6. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था ?

उत्तर—महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में निम्न अंतर था—

सूर्योदय—सूर्योदय होते ही लोग कौंखते-कूँखते-कराहते अपने-अपने घरों से बाहर निकलकर अपने पड़ोसियों और आत्मियों को ढाढस देते थे। "अरे क्या करोगी रोकर, जो गया सो चला गया।" "भैया! मुर्दा घर में कब तक रखोगे।"

सूर्यास्त—सूर्यास्त होते ही लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। चूँ भी नहीं करते। उनकी बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी। पास में दम तोड़ते हुए पुत्र को अंतिम बार बेटा ! कहकर पुकारने की भी हिम्मत माताओं में नहीं होती थी। रात्रि की इस विभीषिका को चुनौती देती तो सिर्फ एक पहलवान की ढोलक।

प्रश्न 7. कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था—

(क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है? (ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है? (ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं ?

उत्तर—(क) पहले मनोरंजन के इतने साधन नहीं थे जितने आज हैं। अतः पहले लोग और राजा-महाराजाओं का मनोरंजन कुश्ती और पहलवानी देखने-दिखाने में व्यतीत होता था। अब मनोरंजन के अनेक वैज्ञानिक व इलेक्ट्रॉनिक साधन हैं साथ ही अन्य आधुनिक खेल प्रतिस्पर्धा आ गई हैं। न राजाओं का राज है न ही दंगल और कुश्ती का महत्व है।

(ख) इसकी जगह अब क्रिकेट, घुड़सवारी, बैडमिंटन, टेनिस आदि खेलों ने ले ली है।

(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए कुश्ती और पहलवानी का वर्तमान जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है, यह बताना आवश्यक है। विद्यालयों में और अन्य हेल्थ क्लबों में इसका प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कई स्तरों में इसकी प्रतिस्पर्धाएँ आयोजित करने और विजेता को आजीविका के साधन उपलब्ध कराने से लोगों की रुचि इस दिशा में बढ़ेगी।

प्रश्न 8. आशय स्पष्ट कीजिए—

"आकाश से टूट कर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।"

उत्तर—अमावस्या की काली अंधेरी रात में महामारी की विभीषिका में कोई उन पीड़ित लोगों की मदद करने आना चाहता तो उसकी भी शक्ति क्षीण हो जाती और वह आधे रास्ते में ही हौसला खो देता था। ऐसे में उसकी भावुक सहानुभूति की कोशिश पर उसकी बिरादरी के अन्य लोग उसकी असफलता पर हँसकर मजाक उड़ाते थे।

प्रश्न 9. पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मानवीकरण के अंश निम्नलिखित हैं—

(1) अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।

आशय—रात का मानवीकरण किया गया है। ठंड में ओस रात के आँसू जैसे प्रतीत होते हैं। वे ऐसे लगते हैं मानो गाँव वालों की पीड़ा पर रात आँसू बहा रही है।

(2) तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

आशय—तारों को हँसते हुए दिखाकर उनका मानवीकरण किया गया है। वे मजाक उड़ाते प्रतीत होते हैं।

(3) ढोलक लुढ़की पड़ी थी।

आशय—यहाँ पहलवान की मृत्यु का वर्णन है। पहलवान व ढोलक का गहरा संबंध है। ढोलक का बजना पहलवान के जीवन का पर्याय है।

Scanned with CamScanner

17. शिरीष के फूल

—हजारी प्रसाद द्विवे[illegible]

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ के साथ

प्रश्न 1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है ?
[CBSE (Delhi) Sample Paper 2008, 10]

अथवा

शिरीष की तुलना किससे और क्यों की गई है ? [CBSE (Foreign) 2014]

उत्तर—कालजयी अवधूत अर्थात् काल को जीतने वाला संन्यासी जिस प्रकार संन्यासी जीवन के सुख-दुख, उतार-चढ़ाव, कष्ट-कठिनाइयों हर परिस्थिति में समान भाव व व्यवहार में रह कर जीवन का आनंद लेते हैं ठीक उसी प्रकार शिरीष का फूल ग्रीष्म ऋतु की प्रचंड गर्मी में जब उमस से लोगों के प्राण सूखते और लू से हृदय उबलने लगता है तब भी चिलचिलाती धूप में इस वृक्ष के हर अंग सरस बने, फूलते-फलते रहते हैं इसलिए शिरीष को कालजयी अवधूत कहा गया है।

प्रश्न 2. ''हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है।'' प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें। [CBSE Sample Paper 2013]

उत्तर—हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता जरूरी हो जाती है निसंदेह सज्जनों के लिए यह उक्ति प्रासंगिक होती है कि वज्र की तरह कठोर लोग, मोम की तरह कोमल भी होते हैं उसी प्रकार शिरीष के पुष्पों को इतना कोमल बताया गया है कि वे पक्षी के पैरों का भार सहन नहीं कर सकते हैं किन्तु फल उतने ही मजबूत होते हैं कि जब तक दूसरा नया फल धकिया के गिरा न दे वे वहीं पर बने रहते हैं उसी प्रकार शिरीष का पूरा वृक्ष बाहर की प्रचंड गर्मी को सहकर अंदर से हरा-भरा कोमल सरस बना रहता है। अतः आंतरिक सरसता के लिए बाहरी आवरण की कठोरता जरूरी होती है।

प्रश्न 3. द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविपु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट कीजिए।

[CBSE (Outside) 2008]

उत्तर—द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविपु बने रहने की सीख दी है। जिस प्रकार शिरीष का वृक्ष चहुँ ओर फैली लू, अग्नि, धूप, प्रचंड गर्मी के बावजूद सरस और फलों-फूलों से आच्छादित हरा-भरा रहता है उसी प्रकार जीवन में आने वाले सुख-दुख, कष्ट, मार-काट, लूटपाट, खून-खच्चर के माहौल में भी अपना हौसला न खोते हुए विपरीत परिस्थितियों में भी शांत और स्थिर रहकर जीवन जीना चाहिए।

प्रश्न 4. ''हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!'' ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देहबल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे ?

उत्तर—अवधूत वास्तव में वे संन्यासी हैं जिनका आत्मबल मजबूत होता है मन और आत्मा को वश में रखकर कठिन साधना करते हैं ऐसे अवधूत अब नहीं मिलते हैं। वर्तमान समय में देहबल से वशीभूत लोग हैं। ऐसे लोग अपने शारीरिक सुख के लिए साधन, सम्पन्नता, माया, मोह जुटाते रहते हैं। स्वार्थ से वशीभूत लोगों के अंदर आत्मबल की कमी के कारण मानवता की भावना समाप्त होती जा रही है। शिरीष और गाँधी जैसे लोगों की कमी के कारण प्रेरणास्रोत अनासक्त योगी जैसे लोग नहीं मिलते हैं।

प्रश्न 5. कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाइए।

Scanned with CamScanner

5. 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किया।

उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. सत्य, 4. सत्य, 5. असत्य।

18. (1) श्रम विभाजन और जाति-प्रथा
(2) मेरी कल्पना का आदर्श-समाज

—बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ के साथ

प्रश्न 1. जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे अंबेडकर के क्या तर्क हैं ?

[CBSE (Delhi and Outside) 2010, 11, 12]

अथवा

जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता ? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए।

(CBSE (Foreign) 2014)

Scanned with CamScanner

उत्तर—जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का रूप न मानने के पीछे निम्न तर्क थे—

1. जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कर देती है।

2. जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है।

3. मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार पहले से ही गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

4. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं होती है।

प्रश्न 2. जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है ?

उत्तर—जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण बनने के पीछे प्रमुख वजह है मनुष्य को रुचि व क्षमता के अनुसार पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है। पैतृक पेशा में भले ही वह पारंगत न हो ऐसी प्रतिकूल (विषम) परिस्थितियों में भी पेशा परिवर्तन की अनुमति नहीं देता है। ऐसी स्थिति में काम करने वाले का ना दिल लगता है न दिमाग। दुर्भावना से ग्रसित होकर विवशतावश कामचलाऊ काम करता है जिसकी परिणिति बेरोजगारी या भुखमरी के रूप में आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है।

प्रश्न 3. लेखक के मत से ''दासता'' की व्यापक परिभाषा क्या है ?

[CBSE (Delhi) 2009 (C); Foreign 11, 12, 13, 14]

उत्तर—अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न होने का अर्थ उसे दासता में जकड़कर रखना है। दासता केवल कानूनी पराधीनता ही नहीं है यह वह स्थिति है जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। इसमें कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

प्रश्न 4. शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं ? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं ?

उत्तर—शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह इसलिए करते हैं क्योंकि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करना है तो समाज के सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाए अन्यथा उत्तम व्यवहार के हक की प्रतियोगिता में उत्तम कुल, शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक संपदा तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठा का लाभ वाले लोग बाजी मार जाएँगे। अत: राजनीतिज्ञों को भी जनता के साथ व्यवहार्य सिद्धांत का पालन करना चाहिए।

प्रश्न 5. सही में अंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं ?

उत्तर— ''सही में अंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है'' इससे मैं पूर्णत: सहमत हूँ क्योंकि किसी भी क्षेत्र में व्यक्तियों की क्षमता के मूल्यांकन का मापदंड समान होने से ही मूल्यांकन सही हो सकता है। यह तभी संभव है जब सभी लोगों को जातिभेद से रहित (परे) होकर समान जीवन-सुविधाएँ एवं भौतिक स्थितियाँ उपलब्ध कराई जाए। सभी को क्षमता प्रदर्शन का समान अवसर और प्रशिक्षण का समान अवसर प्रदान किया जाए।

Scanned with CamScanner